



0851CH04

चतुर्थः पाठः



सदैव पुरतो निधेहि चरणम्

[श्रीधरभास्कर वर्णेकर द्वारा विरचित प्रस्तुत गीत में चुनौतियों को स्वीकार करते हुए आगे बढ़ने का आह्वान किया गया है। इसके प्रणेता राष्ट्रवादी कवि हैं और इस गीत के द्वारा उन्होंने जागरण तथा कर्मठता का सन्देश दिया है।]

चल चल पुरतो निधेहि चरणम्।
सदैव पुरतो निधेहि चरणम्॥

गिरिशिखरे ननु निजनिकेतनम्।
विनैव यानं नगारोहणम्॥
बलं स्वकीयं भवति साधनम्।
सदैव पुरतो॥

पथि पाषाणाः विषमाः प्रखराः।
हिंसाः पशवः परितो घोराः॥
सुदुष्करं खलु यद्यपि गमनम्।
सदैव पुरतो॥

जहीहि भीतिं भज-भज शक्तिम्।
विधेहि राष्ट्रे तथाऽनुरक्तिम्॥
कुरु कुरु सततं ध्येय-स्मरणम्।
सदैव पुरतो॥



| | | |
|------------------------|---|----------------------------|
| पुरतो (पुरतः) | - | आगे |
| निधेहि | - | रखो |
| गिरिशिखरे | - | पर्वत की चोटी पर |
| निजनिकेतनम् | - | अपना निवास |
| विनैव (विना+एव) | - | बिना ही |
| नगारोहणम् (नग+आरोहणम्) | - | पर्वत पर चढ़ना |
| स्वकीयम् | - | अपना |
| पथि | - | मार्ग में |
| पाषाणाः | - | पत्थर |
| विषमाः | - | असामान्य |
| प्रखराः | - | तीक्ष्ण, नुकीले |
| हिंस्राः | - | हिंसक |
| परितो (परितः) | - | चारों ओर |
| घोराः | - | भयङ्कर, भयानक |
| सुदुष्करम् | - | अत्यन्त कठिनतापूर्वक साध्य |
| जहीहि | - | छोड़ो/छोड़ दो |
| भज | - | भजो, जपो |
| विधेहि | - | करो |
| अनुरक्तिम् | - | प्रेम, स्नेह |
| सततम् | - | लगातार |
| ध्येयस्मरणम् | - | उद्देश्य (लक्ष्य) का स्मरण |



अभ्यासः



1. पाठे दत्तं गीतं सस्वरं गायत।
2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-
(क) स्वकीयं साधनं किं भवति?
(ख) पथि के विषमाः प्रखराः?
(ग) सततं किं करणीयम्?
(घ) एतस्य गीतस्य रचयिता कः?
(ङ) स कीदृशः कविः मन्यते?
3. मञ्जूषातः क्रियापदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

निधेहि विधेहि जहीहि देहि भज चल कुरु

यथा-त्वं पुरतः चरणं निधेहि।

- (क) त्वं विद्यालयं
- (ख) राष्ट्रे अनुरक्तिं
- (ग) मह्यं जलं
- (घ) मूढ! धनागमतृष्णाम्।
- (ङ) गोविन्दम्।
- (च) सततं ध्येयस्मरणं ।

4. (अ) उचितकथनानां समक्षम् 'आम्', अनुचितकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत-

यथा-पुरतः चरणं निधेहि।

आम्

(क) निजनिकेतनं गिरिशिखरे अस्ति।

(ख) स्वकीयं बलं बाधकं भवति।

(ग) पथि हिंसाः पशवः न सन्ति।

(घ) गमनं सुकरम् अस्ति।

(ङ) सदैव अग्रे एव चलनीयम्।

(आ) वाक्यरचनया अर्थभेदं स्पष्टीकुरुत-

परितः - पुरतः

नागः - नागः

आरोहणम् - अवरोहणम्

विषमाः - समाः

5. मञ्जूषातः अव्ययपदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

एव खलु तथा परितः पुरतः सदा विना

(क) विद्यालयस्य एकम् उद्यानम् अस्ति।

(ख) सत्यम् जयते।

(ग) किं भवान् स्नानं कृतवान् ?

(घ) सः यथा चिन्तयति आचरति।



(ड) ग्रामं वृक्षाः सन्ति।

(च) विद्यां जीवनं वृथा।

(छ) भगवन्तं भज।

6. विलोमपदानि योजयत-

पुरतः

विरक्तिः

स्वकीयम्

आगमनम्

भीतिः

पृष्ठतः

अनुरक्तिः

परकीयम्

गमनम्

साहसः

7. (अ) लट्लकारपदेभ्यः लोट्-विधिलिङ्लकारपदानां निर्माणं कुरुत-

लट्लकारे

लोट्लकारे

विधिलिङ्लकारे

यथा-पठति

पठतु

पठेत्

खेलसि

.....

.....

खादन्ति

.....

.....

पिबामि

.....

.....

हसतः

.....

.....

नयामः

.....

.....

(आ) अधोलिखितानि पदानि निर्देशानुसारं परिवर्तयत-

| | | |
|--------------------------------|---|-----------|
| यथा - गिरिशिखर (सप्तमी-एकवचने) | - | गिरिशिखरे |
| पथिन् (सप्तमी-एकवचने) | - | |
| राष्ट्र (चतुर्थी-एकवचने) | - | |
| पाषाण (सप्तमी-एकवचने) | - | |
| यान (द्वितीया-बहुवचने) | - | |
| शक्ति (प्रथमा-एकवचने) | - | |
| पशु (सप्तमी-बहुवचने) | - | |

योग्यता-विस्तारः

भावविस्तारः

डॉ. श्रीधरभास्कर वर्णेकर (1918-2005 ई.) नागपुर विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष थे। उन्होंने संस्कृत भाषा में काव्य, नाटक, गीत इत्यादि विधाओं की अनेक रचनाएँ कीं। तीन खण्डों में *संस्कृत-वाङ्मय-कोश* का भी उन्होंने सम्पादन किया। इनकी रचनाओं में 'शिवराज्योदयम्' महाकाव्य एवं 'विवेकानन्दविजयम्' नाटक सुप्रसिद्ध हैं।

प्रस्तुत गीत में पञ्जटिका छन्द का प्रयोग है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। हिन्दी में इसे चौपाई कहा जाता है।

भाषाविस्तारः

न गच्छति इति नगः। पतन् गच्छतीति पन्नगः।

उरसा गच्छतीति उरगः। वसु धारयतीति वसुधा।

खे (आकाशे) गच्छति इति खगः। सरतीति सर्पः।

